

॥ स्वामिश्री ॥



साधु हृदयणी प्रार्थनागंगा

प्रभु परम... प्रगट पुरुषोत्तम
अक्षर स्वरूपे प्रत्यक्ष नयनगोचर
मणे छे... ओणभाय केवण कृपाथी
माहात्म्य छलकाय... समर्पण थाय
भक्तो-संबंधी सर्वनुं माहात्म्य समजाय
'स्व' ओगणतुं जाय... निर्दोष थवाय
संबंधी सर्व मोटा मनाय... दास बनाय
प्रभु राख थाय... प्रत्यक्ष प्रसन्न थाय
आतमे प्रभुनो अजंड निवास अनुभवाय
सेवा-भक्ति निर्दोषपणे थती रहे
सर्वत्र सर्वमां प्रभुनां दर्शन थई रहे
सहजानंद प्राप्त थाय ने सुभी थवाय
जगत - पंचविषय जिताई जाय
केवण प्रभु संबंधे अलोहो ! थया करे.
संतत्व महेंद्री रहे... प्रभु विवसी रहे.

आपणे आवी परम प्राप्ति माटे जंभीअे
पणनो विवंब कर्था विना प्रत्यक्षने प्रणामता रहींअे
मन-बुद्धि-चित्तनां समर्पण धरता रहींअे

दृष्टि दिव्य थतां सर्वत्र तेओने अनुभवता रहींअे
कर्ता ते मानता रहींअे ने वंदना कर्था करीअे
समग्र समर्पित थई जे जशे... शून्यभाव थशे.

प्रभु मलपता रहीं आवकारशे
गणे लगावी, पोतामां ओगाणशे
आसपासनां सौ ओगणी गयां... दीसशे.
सौ आ मारां जे मारा प्रभुनां-साहेबजनां
तेने विनम्रभावे वंदन थतां रहेशे
सौ मोटां... माथानां मुगट... केवल्यमूर्ति
ते दर्शन करी धन्य धन्य थई जवाशे.

श्रीज आ ब्रह्मांडे प्रगट थया...
ते दिव्य कार्य... अेकांतिक धर्म स्थापननुं कार्य करवा
गुणातीत स्वरूपे प्रगट रह्या...
सर्व संबंघित आत्मांमां प्रभु पधराववा
'साहेबज' आजे प्रगट प्रत्यक्ष...
आपणने प्रभु आपवा ने सुभी करवा
आपणे सौ हवे... चावो 'साहेब' प्रगटावीअे
श्रीज-स्वामी स्वरूप 'साहेब' अंतरे प्रगटावीअे.

साधु शिष्यावली जय स्वामिनारायण.

साहेब-श्रीज प्रागट्य... २८ मार्च-२९ अप्रैल... अनुसंधाने लभ्युं

